

ॐ नमऽर्थो गाणपतये । वर्मीव प्रत्यक्षं
ओ नमऽर्थो गाणपतये । वर्मीव प्रत्यक्षं

तत्त्वमासि, वर्मीव कैवल्यं कर्त्तासि,
~~तत्त्वमासि~~ ~~वर्मीव~~ कैवल्यं ~~कर्त्तासि~~,

वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने

वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने

दृष्टिरूपी वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने

दृष्टिरूपी वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने वर्तमाने

तं साक्षादात्मारि नित्यम् । ऋतं वचि ,
तं साक्षादात्मारि नित्यम् । ऋतं वचि ,

सत्यं वचि ! अव तं मास् , अव
रात्रं वचि ! अव तं मास् , अव

वक्तारम् , अव श्रीतारम् , अव
कमारम् , अव आतारम् , अव

दातारम् , अव धातारम् , अवानुचानमव
दातारम् , अव धातारम् , अवानुचानमव

शिष्यं, अव पूर्वात्, अव पुरस्तात्,
शिष्यं, अव पूर्वात्, अव पुरस्तात्,

अवीतरात्, अव दक्षिणात्, अव
अवीतरात्, अव हिमात्, अव

चौधूर्णात् , अवाधरानात् , सर्वतो माँ
पौधानात् , अवाधरनात् , सर्वतो मा'

पाइ पाइ समाजात् ॥
पाइ पाइ समाजात् ॥